THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES F WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.
IBB—1971— 241-131

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB - 11

MBB - 1973 - 241
1. Film strip number

72
2. Source

ĀRYĀVALOKITEŚVARASTOTRASAṄGRAHA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPALI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

16 cm. x 6 cm.
9. Size

5
10. Lines to a page

36
11. Number of leaves in complete work

12. Missing leaves

BANDHUDATTA ETC.
13. Author and Date of composition (if given)

14. Number of Chapters

15. Remarks: It is an important collection of works on Lokeśvara.

नमानक्षुनाथैसाभिहृ मनदितमूधियाविलालयनाण्डनमाकृयवाहिश॥ १७
॥रवहिरवयुनिम्पुयै यल मनसाक्रुन वेद्रुयार्वैक्षा शूइब पूरवानि गुंडौ मौम्या
लिान सकलतेजथ्यपनि मि नर्रु व क्ताधिक्रवैं॥।१८॥ नं कृइ तैयागि स्मै म्या
[illegible] यन क्ताचि वथ्व गावलं क्य चा ३ मा गुल्हा थाथि कें द्र ४ सेलु गार्जिकवं
सिसाल्लिनस्मा क्षायृ ॥ गा तिकं ब्दविनासवन ठुवै सैक्ला वमता दधियाक

प्रतिष्ठितवसुपन वा कृतीं ऊ ब्र दृलि द निलम ग लता कृषा। १७ वा दसि ताजू
गता नू न ल न स्का त्वें पालि म व कृ दू ४ रवि न स्वां निडि ग ६ दू ऊँ या मून मथ मा नाऽ
त्वडम कि हौ क वा न व मा ल ॥ १२ ॥ मकल डग्र नलि किं ख न द हा त्वें पलि मखि
श्री ऊ ग न सु द हा र ग व न जू नू प म का न्‌ लम सि मु त्वें ऊ न वि दि श्री का व न प वू
॥२० ॥ वा लि ला वि द लि न क कृ वी ठैं ग ज व प न हि ता वि र व यैं श्रा ग्रां या दि था क्षान स

माहिनयिमीलेंयावकुज्माक्षावनयिनें ॥ २१ ॥ प्रेलम्भूवकूशनयिकननावासयप
शितासीलकनागिरवाकुथिमिहमातमडावगदस्थ्रविखयजलिलाकुसलैरवलाण
२२ ॥ लकालजनाथिप्रतियाकदूनाश्यागिरजतानियकवदलनाऊंननवकामिख
ढिखवंतैरगवनयूनक्षमाविरववनी ॥ २३ ॥ नाथकुपाहेयोस्मविकमयासह्यरवू
ऊथावऊधवक्षायाम्हूनऊवनिथ्यालकवकूदह्यसनाकिनिनैऊनम्भूनिह्नकयरव

या २४ ॥ ७० ॥ नि ४ र ग च मू ४ मू म ल न्या ना पि ठ न्मू र्न्यौ र्म र्म्म न ठ ग प द्भू

न र्र मा ड्री पा लि र्वं च न पा ह्ने नं ठ न प्र्या सि ड्न्द्र ल वि वी द्धि वि या स बा रज बा

७० कि ड्री म रू आ र्या व या कि मं ड्ढ व ल स्या ॥ च ल र्या कि या ल वि र्वं वि ग स्मा त्र स मा फ वा ड्ढ्ब्भू

रु ॐ न म ४ ड्री आ र्या व ला कि र्ये श्व रा य य रा कु ल्व प्र न भ्य म र य क र स र्व्ध सं वा रं

प्र ल्ले व न्द्र व द ना र्द्दे ठा य प्री भ्न्ड्रा ल ध ह्ल ह्ल न म क्र ट ॥ कु न म क्रि मा र्ग्रा मं य द्ध्री या द्धि

व... द्दसिद्धिस्थानवासिना ॥ १ ॥ बाउनुङ्कु माझा वरीपी मक पाल वकुास की

ध्वंकं हि मकुपाव मि वाजु ङ्गौ व कृ गध्वं ऋ नि थर्वं म ध्र्यं व वाख्याल यध्रु पाकि

धवद्धु सिद्धिस्थानवासिना ॥ २ ॥ बार्गं लोकनाथ मव लोकित ना मध्य यं सकु

प्रविद्ध मदवकेव सर्प्र बाउं बाखिमा म नि कलित न तक्कुछल घध्र गन्हु तिं

व ख्याम्निद्धु ति सखिकुनि मानिवा ॥ ३ ॥ बाविह्ला नवासि न यत्नायि न स छि सल

॥२५॥ ०॥ ॐ नि ४ र म व स ४ म स म ल न्य ना पि ड न्य न्थे र्म म्य न ड ग य क्रु
न र्र मा ञ्जा पा लि कीं य न वा स्तो नं ठ न प्र सि ञ्जु न्द्र ल वि वी द्धि वि या स वा ॥ २७ ॥ वी
०॥ कि द्वी म नू ञ्जा र्या व या कि गं ड्ब ल स्य ञ्च ल पा कि या ल वि मं वि ग स्का त्र स मा फ वा ङ्ग ब
ॐ न मः ञ्जी ञ्जा र्या व ला कि ये ञ्च्र वा य वा ञ्जु त्व प्र न भ्य म र्ग्य क य स र्द्ध स्वा ल
पू र्ण व न्द्र व द ना र्ह ल्ज प्र ञ्जा न नेत्रा न ब ह्म ह्म न म ह्व टी ह्य ग म क्ति मी र्ग्या यं य ञ्जी या द्धि

वन्दे तुषितज्ञानवासिने ॥ १ ॥ वाउद्धृङ्क मञ्जु वरीपी ग्रक पानवज्रास क्री
धर्म्मा हि मञ्जुश्रा रमि वज्रेण ज्ञौव क्षग्ध्रुं गुरुतिथ्वं सध्रुं यं ववाख्यातयज्ञयान्नि
वन्दे तुषितज्ञानवासिने ॥ २ ॥ वारौ लोकनाथमव लोकितनामस्थ यंयज्ञ
श्रविग्र स दवक्षेव र्तुर्थि वाउँ वाविफा मनिकलितनत्वकुञ्चुल घुळ्ग नञ्जोति
व ह्मयाहि नितुति स क्षिक तीन मासिवा ३ वालेज्ञानवासि नव ख्यायि त स द्विसत्व

संसारयीकतिमिर्याल्पव मग्नसत्वा ॥ ज्ञालोकिनं प्रथमनूलियवाधिमा
तीप अयाब्धिवरमार्ग्यदं देवं नमामि ॥ ६ ॥ गत्वाचयवनवेकं गूच्छविवि
सम्मूलीनि कृत्यैहविदिसावद्वं हंसप श्री ॥ प्रनावकिसकवढुःखविनाशयस
तीराणं पद्मयां जिनवराभिलमेनमामि ॥ ७ ॥ मैत्रीसयेजियमपावकर
यहरामि दंष्ट्रं स्मिवाऽभिनज्ञागणकामरूवी ॥ यंकर्मरहमिभिवधैसिनाम

निमितंसातिपञ्चपालिहिकमासमेतीनमामि ॥ ८ ॥ नुलावयेनवयरूप
मन्नाहेचार्यैगुनैलोकनाथेन्हे रयेकोयसर्वमत्वा ॥ दुःखकान्निकवस्तु
स्मसालिमिमालि दुःखवींसातिपञ्चपालिहितकिविषनमामि ॥ ९ ॥
वेप्रलोकगतयकोरूणावसेन सूर्यमूर्वैठ देवपवगाजी हुमजादु
दुःखपीडितजलाविचेरखाउवी सातिपञ्चपालिहिहबनासकवैनमामि ॥

८ ।।शत्रुध्यान्य हस्ते कुधपीडितनप्र नसखामीपीयनंकव नादसय
ग्रंन दीहिपाद्यु मखिय दनरहकरुषाहुबाहा।। तंप्रज्ञापाहितनरहकु
रुषान्नमामि।। ९ ।। गतावियरेरद्वनवर्जितवन्हसूर्य्यपिफामनिकाल
नवलप्रहावनासनंयक्षवाक्रसगनेःध्यवहोनमस्के।। तंप्रज्ञापाहितनमः
रुषान्कृतंनमामि।। १० ।। गतावियनववि्रहनमनाचथस्थःयःदिय

तंदूलमनूलेंसविग्नुयात्रेध्वर्म्मकथनयवितषितदानवंद्रंतातीर्यर्म्मया

हिववधूमदर्दनमामि ॥ ११ ॥ गलावय्यनादिविकूनुलदवपूता

दानस्यदीनक्षधयीतितदूष्खवितायसंतंयाववजियथिपूष्टेसस्यहियते

त्पियस्रपालिधनत्येब्दिकरंनमामि ॥ १२ ॥ तंकामरपमपदातितवाकासिरिः

कामायसेंनववितींतवबाह्रोमिरिप्यातस्याविरोंयरिवजितधम्मीयिल्ला

तैप स्या शिवरुद्ररूपधवं नमामि ।। १३ ।। विद्रुम तरु रुमीकुमीकाटि समृद्ध
यतिगलोचयनम्रूलिन्रूपमन्मवर्त्तिनिखाविनंचूर्नेधुनायदर्दकिवम्मी ।। मी
पर्भपाशिवरुद्रमेत्रुधवेंन्नमामि ।। १४ ।। दूरिकृमोर्ज्जिदविगम्भवरुव
सूद्धि ज्ञारुद्धि दुःखरुयपीतिनसर्वेसत्वाक्षेयादिदृष्टिवरुद्रश्रीदसमृ
द्धिनतो ।। मीपस्पाशिवयकारुणिकं नमामि ।। १५ ।। वावोरुजञ्जगुप्तान

स्पमलोउ वनाउ कें गय नवनिर्डं रु यवा कुमि ठिं४ा आज्यारु [illegible] वं
व ग मह त म्नृ ढे तेंथ स्रीपा हिडिजिकम्ृ स्यरु यन माभ्रिा १ ६ँ वं ग वा रुकें
रुव स्मवा मिविमृ कि दृ४रवं नाना त माधिवयर्लिं पृ [illegible] विवि त्रनम्न.गेयाम कृ
ढनीवव्रा किजरु न्यमामत्र्याा तेंव स्रपा हिद्धयनामहकावनमा मिा। १ग ाना
नारथींत वस्मवामिविमृक्लि दृ४रवं नाकस्य दजरु यवाकुत थेवरृ गेत

ष्ट्र नद्याविभागे द न कल्पवयाम्निदय्या॥ तं पद्मेयाहिजुरय्य ॐ दद्न्नमामिया

१८ ॥श्याश्रीरय्यीरवगयिजावसताकिनीनाक्षुयक्षीश्याधिर दूषू वेयाया दू

रवीवैयागह्लाणवह्व पायविनाशायक्रि॥ तं पद्मेयानिरय्यनामकोर्यनमामि॥

१९ ॥गणक्षश्रमीनियमधर्मज्ञमाचयाग॥ यस्तुकयामिष्ट्रियवेक्षवर्यास्त्रि

प्रह्लस्याज्ञिनगोषपावी॥ तं पद्मयानि.वबदायसदीनमामि॥ २० ॥नित्यदर्श

नसु ब्रह्मक्षद्रियाकलषू नानाछ मीक्ति यक्ष वँपकयावि ञ्जा गँंशाव स्यागदाहे
दिउसापदक्क विकानि॥ कीय र्घपावि विश्वयषूस्त दानमामिय। २१ बुद वेंक्कु वयववहे
यमवह्निजस्य गन्ध वियक्ष्मूनि दाननवह्निजस्ययक्ष्मषू नागमनूर्षिझ्वनमस्कयाहे
सिंधाहृ नैविज्ञा नागनूतैनमस्कयामिव। २२ वाय्यत्यथ्य गँ नकबू नानवनि॥
स्यकालीज्ञानि वैयाशु कँध नवह्निसूनयुक्तामा। ज्ञायूविहर नि बद्र पूतविमाल

स्य श्री पव पाक्ति कालमणिया ख्याति लोकनाथथ। २३ ।सी किलि रुववि ज्जम
सानूत्स वृं रा कों दिवायगवेना नेम नूम्भ वत्ति ः ग दू स्वह्ना वि पूयपाय विना ल्ग्या त्ति
स्तुत्याक्ति नव सगतैंक व चया ह्नि ।। २४ ।। हों दि रुगवरू भूर्याया वला कि नुं छवव.
स्य. कर भारू वर्लो लंू समाप्त ।। ꣼ ।। मैं ॐ नमो लोकनाथय। सर्व्वु रु गोम
सि कै यि ग रुर्यं क्ष्मा ह्नि भ वच्च विं न गवचू पं. स ह्व दू य व र धि र्थी ह्न र स्व पं तै नमा

ाउत्पलवदिगद्धिनगकुमावासितिद्धिश्रीमवर्त्तसुनिर्मलारगद्गतकास्तन

जुन्हयकश्ववरसर्वमत्वडहावनि॥ १ ॥श्रीवज्रसत्वभैरूमूधनिवज्र

पद्महक्षाविनारविघ्नक्वायिगजगमनाथमानस्यवद्दिनी॥ ८ ॥जाति

चंपककामायकिवनुमावनीचतुठक्षकदिरपालिजातकुमकुधवनजागकौडावसीय

क्रीं॥ ९ ॥नाकिगीवकश्याबफंकुमन्नुहुननविथ्यिकारविवि धप्नखकमल

उत्पन्न विनय संयुक्त ज्ञानीता॥ १० ॥वैश्ययवं साम्न दं गम्र डाशी खवाङ्ग सः

मंडे याय२ लीस सुस्राती लो ल माडवी मिहि प्रदक्ष क्षा॥ ११ ॥कुदु दिलाः

कयाले सद्व यास मनाव मा२मा ना विंव दिक दवढ ख्या लाहीनदि ग मा दिलि का॥

१२ ॥चन्द्र लविपाणु लकिय सयुर्न्हूलरुडथिनि मे ला२ दवमा नवय्य क्षकिन्न वगे

नौलाक सपूडि ना॥ १३ ॥कायवाक्कि लि निमल विवृद्धग नास्त्रप्रदक्ष नर स्वगः

कायवाचामनसा ध्याथी

[illegible]

[illegible]

कुत्रयदाकय मलधघष्ठवाड्डुसमनारथ॥ १८ ॥फ्रेयंदनड्डामिकू त्र ज्रावील

न्मरिता स म नाएकेरदा वि रवव्र क्रयरंद्रवदवनामव मूप डिगी॥ १७

॥ग्ग, याहिष्ठु यमदाष्ठुयूसर्व दु यानिलऊ नंरनी लालष्ठ नी ला काली वाया वड्डिः

मनामयीर॥ १८ ॥श्रीम्रयंठ ध्रमध्रुठं क्ष ा जिर वप्रका कि त्रिकार दंवा धिद वंम

लदवंसवदवपयडिगार॥ १९ ॥लोलवुष मतनरकुंपं रवन कज्ञ तमस

[illegible]

रयर्वेउलमछ्ठनउन स्वयींद्र काउलम प्राप्तिना॥ १८ ॥उत्द्रस्नसद्धि सर्वसिद्धिः

रुवनुलयमूक्रिवर्दे रयेद्य गर्ह ममहाणवनी स्वयंद्र कालिप्रजाह्नि दीवे॥

१५ ॥हयकस्यं दक उलमरवन्तिना याउकथ्यसवहाँनर क्रिं कि नामा मत्ता नायन्हुः

यें वृज्ञत्यन पावन॥ २० ॥याम याम देवलमलहारि वृद्धि मव नमवघाह्नमी

ख्याता रयेद्युक्र्वैन काय यविले सिद्धि राव स्रमह्नि दैरा॥ २१ ॥कालिडनीलय

सत्वमनमू उद्धनत्व महामनेरजू ह्राव ठ यृद दहेहम सु या वमिसमप्राय्रु याम॥

२२ ॥छ्रं०॥ति श्रीपमक्षकु थैस्य वछुकसमाप्त॥ ❁ ॥ॐ नमः ला:

कनाथ अया॥ॐ वन ठ यवद्धि मना ाकछरं ज्र मलाधियर्ति श्रुतिव ज्ञ धलीम निर्

वाज वर्यी द्नि सिद्धि कर्द्वृ प्रह्व मामिवलाकि तनाथकर्यी॥ १ ॥सुगमाखड

रूपत्तरवपधर्वं वद्भय रु हारस्रबित दें ह्र धर्वं॥ज्र मिमा तनाथ गत माचि धर्वं कनका

ङोविदृक्षिनवामकवाँ॥ २ ॥ कोदवामलविज्ञलधृकुङगी॥ नीसविन्व
समुद्रीलपृकुमखाँकमलायमधात्रनवारधर्वी॥ ङ्किमकुविपालुलगकुयदृ
॥ ३ ॥ अधवकिनयद्धङनातिसमीसवदवृदगजिगमध्यधवृतीवद्
वकुहारतपिनवाद्दृदृगं॥ नूकामलसाद्धवपानिमवाँ॥ ४ ॥ मृगवर्मनिवे
ष्ठिनवामानंकुरकुण्लमाङ्कितलधृतीकमलादलकामलनाकितमकैमावि

[illegible]कि कैं॥ ८ ॥ छ्रू सू नामा नि वेत्व वा गंक नि लिंग त्य कैं हूं क र॥
[illegible]वय क हू निर्थ हू नि ज धर्व फि वि क्र मैं॥ ९ ॥ पूर्व दिका दव [illegible]
[illegible]तल मन्तूर्व रत्र गन फि वि लि ननाक्ष न, विका मनी व दी रत्र जिनैं॥ १०
॥ कं छ क्ष क्ष नि कं क्ष क्रु य ज्ञा हीं कं क्ष व फि न दि मैं ग र्मै, हू न्हा हू ल डू तीं खि दा [illegible]
छ्रू सू नाम य कि लि कैं॥ ११ ॥ छ्रू त्रु व व व प्रद, प थ वा गी स्थ व ग्र फ लौ व:

श्रिनृ मेर त्रद्भिनवब्ज्ञन ज्ञलिका कृल द्धि माद्य कृरवावलित्राय्युवैवा ३२ ॥ वतुती
धर्म्मधातुस्वभावमस्थापया ॥ ॥ ॐ नमः श्री धर्म्मधातवे ॥ श्री धर्म्मधातु वै:
स्याङ्किनव बरब्द्वि माक्ष दर्यी कर्णोर मासिद्धा दणायर् न्नुभाहि त्रासि मायविमत्तुलया
॥ नमो कुरर्थीवङ्किनबबधर्मगार्जमत्तमूनिरञ्जन ओंनप्रदक्षिणाङ्ग यावरा
सिधिरयाङ्गिनीवा २ ॥ वलु मलु लम धातङ्कि ग्र वत्रा क्षवि मताम्नुनिरसि:

हमाव्रूरुवायम्निवल हिन वर्ह्मसाहाली॥ ३ ॥यां स्यादिगाळिनयवनसंर

व दानिड लाकसंयानिम रतुयीगमाव्रूरु कोर्स नारीं वनदकमसालमारिनिणी॥

४ ॥प्राण्यादिनाळिन ठुं नू नालसमदक्षिमारुरु वाक्षु नैर रवसमसमसमरव

स्थानधाविगवृद्धनाथमलामृक्षिवा॥ ५ ॥यस्क्षिमदिगाक्षिग वायम्निवनृत्क्रा

मनप्रक्षिनथ्यापिनारमय्य्वआसन स्थानधाविनवक्षयागमानिप्रहीवा॥ ६

वल्हुक्लपंकजश्रीवर्द्धस्यलग्निथेसदलानलचाभावात्तुं ममत्तहितिगद्दतिकिकयानि
ध्निर्थैनमामिश्वा ॥ ११ ॥ वायस्थैर्ज्ञीमत्तायलघ्यप्रविक्षेपापनाशानैंसवेश्के कामप्रमाक्षा
क्षैंगगच्छन्तिसूक्ष्माविनंश्वा ॥ १२ ॥ वाक्षुफिञ्चार्य्यदेलोकिमं युनस्यबंद्द [illegible] मावंसः
मापका ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॐ नमादेव्याया ॥ छिसिद्धिमं निवच्चपादपंकज ॥ श्रीधर्म्मधातुविः
विजनैंश्वाधिसत्वमतालवस्वर्यैहुयेत्वनमासिहं ॥ १ ॥ धम्मधातुश्चाः
उनमापुस्ना यादेमि. हुन माधु.धा

१ ॥ हलिहलवस्त्रक्रमलक्रमागजांक सयासूरं वइविद्धिउयहायपयउमायसयाः
हनी ॥ २ ॥ प्रनमामिमहावद्धपकजंवायपकातिनं विवकिलिध्यनशुचीः
नु हकिलिनमोस्तुणं ॥ ३ ॥ वतवैत्यमहासाला गंजवनयपकालिनः पद्मगि
रिहूयंदुन्नी ऊंनिरवनमोस्तुणं ॥ ४ ॥ वयनवैत्यनानावर्ण्णु सनवर्ण्णु प्रवाति
नं ऊक्षिजालीह्मानदसावाणाकिलिनमोस्तुणं ॥ ५ ॥ जिनगणधर्मपाउवा

गीश्वरप्रसक्तिरिति यं चक्रवर्त्ती यं चमूढा यं च वर्द्धन नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ योगबलादि-
स्वतुल्य देवी गायागनाप्रसादितः मे श्रीवाधिमत्य आदिमर्त्त्यभव नमोऽस्तु ते ॥
७ ॥ हरि दक्षि वाजिल्ली बि स्वरूपा ऊधिमाय धं सेतनील देमय क्रू थामयीव
नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ अभ्रध्वपदीप गध अस्र त्वयप्रद दानं मन मङ्गलउ-
पसक्ति ते वज्रसत्त्व नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ कालि सर्वक्षं पिंगनी नपा चतुउक्य यर्थन

धर्मज्ञात्मा महेशश्च ग्रीनैं ऋद्धि तैलु वस्थायिनैं ॥ १० ॥ धर्मतुमिमिगिरि सुहादु
द्वस्थाने मनादरं हमवर्ण्ण ध्यान मुद्रा नागर्महीन [illegible] नमामुगं ॥ ११ ॥ ग्रावि
यलोककृत्स्न कनक मूनिालिखिविजिनीविभ्रुतुककाग्रीयत्राण्याख्यासिंदनमात्तुतें
॥ १२ ॥ ध्याविशाजी गीविवयश्रासितैसूगतैंह्नदीं धर्मयारीमहानाउँ दणीय
दयं कृतैं ॥ १३ ॥ धर्मदनस द्विष्णानैं दनैविकृतयन्थकृतैं आर्यसालसादर्शं

मिदक्षणव लवलरधी॥ १ ॥ारुगमाडाज्ञिरिवम्षिद्विमृकणौ,काकिला॥
प्रमिरिवदिर्ये मृकणा,णनिम्वालियम्, दृकृवि,गकैणौं,गनै मामिदणव लवक
केणा॥ २ ॥ाणौरवक्रणाकृमृदामिमला ह्रीडि, नादृषरवविगतींविमलाणा
लागयागमथर्गीविमवाह्नि, गंन माजिदणवलवगयार्णुः॥ ३ ॥ायमुविह
ष्ठीकिमाहि कवकें,स वैवृढमणिारीणु रुवकं॥ वृढयीकठिनतामव वक्रो,गीनमू

मक्तिगललध्रवं।। कमलोदलकामल नारिसर्व मक्ति न मरव व द्रुमवली।। ३

।।कांटिवक्षिनविलि स्तयस्तवं ध्रवं। जिन ज्ञानमहादधियारगनं। वहुद्गल्यम

याजिनलध्यवर्नं ज्ञलक्ष्मधिदलीं वहमोक्तकवी।। ४ ।।भूतलभक्तिकथाति:

रावाणकरीं। सवलीभवबलस्तुतिदसध्यं धिविक्षकलनिजिनमालदलीं। दन्पावायमिका

यवमार्थकवी।। ५ ।।उखुष्ण। विवभकवं गथना द्रयज्ञान। विवाक्षकवांम

क्षै दृणपक्षैस्तदन्कैं तन्नमामि दृणववनववदकौं॥ १० ॥उज्ज्वाक्षसमुद्रवा

स्तवडिक्का धर्म्मज्ञानकृतपापतडिक्का॥ गैधं षुपसमूवास्तवडिक्का तंन

मामि दृणवववडिक्का॥ ११ ॥मध्यस्तं दृंदैरनादिनं घोषं सत्य घर

म्मिनयज्ञुह्विन आर्षं दिर्व्यवादियववादिनं घोषं तं नमामि दृणववदन घोषं

षैः॥ १२ ॥त्रीवत्रीवदलत्रीवस्तत्री वेद्या किविर्यनवत्रीवस्तत्रीवाद्रमवतिं

स्तुम

ग्रीवम् ग्रीवं ॥ नंन मामि दलावनवल ग्रीवं ॥ १३ ॥ सिंहमयादि मक्कुरंतम्

कार्यं ध्या न कायकृ गमागन कायात्म्र कसुरेश्वन निर्म्मल कार्यं ॥ नंन मामि

दलवनवल कार्यं ॥ १४ ॥ सुवनवक्त्रहरि सारि जनवक्त्रं नीलपीनहनीमापि

वक्त्रं ॥ हानदवनजुरसारि जनवक्त्रं ॥ नंन मामि दलावनवल वक्त्रं ॥ १५

॥ हलनामोगकल सारि जनवाक्र पृथ्वदानसूर सारि जनवाक्र ॥ धीन वीर्यसुर

मक्तिगललग्ध्वरीं।कमलोदललकमलनारिसर्वं, मक्तिगमरवचहमवली॥ ७

॥काढि वध्धिनविलि हवको धर्वं, झिन ज्ञानमहादधियावगर्त, वद्धमूलभ्यम

याशिनलथ्थवर्नंक्क्लक्ष्याधिदलीचहमीक्त कवी॥ ८ ॥श्रुतज्ञानिकवतिः

रावार्णकरी, हमलीध्ववलस्तुतिदद्धधंर्षाधिविश्वक्लनिझिनमालदली, दशायावमिका

यवमार्थकवी॥ ९ ॥उत्तुब्रम, विवचकवंगथमाद्ययज्ञान।विवाशकवांम

मिदक्षणवलवलरूपी॥ १ ॥ वारुगणवा ऊञ्जिरिविमृ षिद्धिमृकञौ काकिलाः
यूसिखिदिर्वी मृकेणा ञनिश्वनिवमृ दृकुञ्जि गकेणौ गनै मामिदक्षणवलवे
केणवा २ वाञ्जीरवक्रूतुक्रू मृदामिमला ईञ्ज नादृ४रवविगतीविमलोगु
लोगलोगगमयगौविमवाल्गं गंनमामिदलवेलवगवागूः॥ ३ ॥ वायेकुविदु
ञ्गिलाहिगवकौ स वैवेद्ध मगिरेशुरवकौ वेद्ध यीकञ्जिनतामय वकौ गीनयू

ाा मिदणवबबलीँबक्कं ।। ४ ।। बह्मीसहत्र विविनश्रलु म्ल्लिय थ्यरु क्लल
गौर्त्रि दय जि न म्क्ष्लि बत्रु वषिल नयृ जि न श्र्यी र्नॅन मॉमिदणंवेबबलमु
ध्रुी ।। ७ ।। नॅपयत्राकविलैँविनश्रीर्विक्रावनङ्क न्त्रवबाँपिनत्रीर्षिनिक्रावि
जानमु [illegible] रिनुत्रीर्षांर्रन मॉमिदणवबबलैंत्रीर्षं ।। ७ ।। दिक्विवॅम
क्तामणिमक्टँचत्रुप्रगामक्टामणिमकंँ [illegible] ज्जागनलिषमक्टमणि

मकुटं॥ जिनमामि दशबलवलमकुटं॥ ७ ॥ वायानुर्पंकजतनवायकन
गुं॥ दिव्यज्ञानविपुलाम्बतन ... त्रं॥ ज्ञान मान्धसमुद्रगाक्रिणनत्रं॥ नमामि
दशबललम्बनत्रं॥ ८ ॥ शुद्धकर्मिश्चिरुमारिणकार्मि सद्धज्ञानव
शुद्धसत्वकार्मिः सद्धप्रज्ञावलशुद्धसत्वकार्मि॥ नमामि दशबलवलकार्मिः
॥ ९ ॥ वाहलुबकृत्गुजामिपारुलदेनरुह्रीसलज्ञानिर्मलदन्कोविष्वीव

ामिदनावबवलैंवक्कं॥ ४ ॥बल्मीमहन्नविविन्नजु म्विंप्ष्यरु कुल
गौर्किदपडिन मब्विाबनुवषिलनपुडिने म्प्लीतॆन मॊमिदनंवेबवलमु
ध्वी॥ ३ ॥नपयनकवि लैंविनग्री रविक्राबनद्ध नवखापिकग्रीषिनित्रवि
गानम्ब्लाअरिनृत्रीषीर्नन मामिदमवबवलग्रीर्षं॥ ७ ॥दिद्विबवीम
क्कानमलिमक्र्टचन्नुप्रगामक्टामलिमकंगं ज्ञागफलिषमक्कटमलि

मकुटं, नमामि दशावबबलमकुटं॥ न वायाकृतंकडनवायकन

र्गुं, दिव्यज्ञानविपुलाबगन त्रै, ज्ञानमाद्ग सुरुगाह्रिकनत्र, ना नमामि

दशावलबबनत्रै॥ ६ ॥ शुद्धकर्मिशुरु मारिन कामि सछ ज्ञानवज्र

शुद्धह्र कार्मि सछप्रज्ञावबशुद्ध स्नकार्मि॥ नमामि दशबलबबलकार्मि:

॥ ह बाहलेद्ध कृतु भागिपाठुल देन, ठ ह्रौ स्ल ल द्वा गानि मल दन्नौ विद्ध्वि प

१ ॥ कलिहतब्रह्मजलक्रनागजेंद्र सनासुरं वंद्य विधि उयहारवयचक्षमानसुवाः
हनी॥ २ ॥प्रनमामि महावद्ध पङ्कजे यायप्रकाशिनीं विव किल्विष नष्टवीः
लह हाकिलिनमोस्तुमाँ॥ ३ ॥वतवैश्यमहासोला गंजवनकप्रकाशिनीः पद्मगि
चिह्नयींदुश्री अजित रदनमास्तुमाँ॥ ४ ॥वयनवैश्यनानावर्णं सनवर्णं प्रवालि
नी जकिजाली ह्रान पद्मा ब्रामा किल्लिनमास्तुमाँ॥ ५ ॥जिनगतधर्मचोडवा

वज्जकूपंकज्ञ्रीवच्छयलमिथेमदलान्लायाणायाउ ॐ नमसतिहिणवउतिककबाति
निर्यीनमामिश्वा ॥ ११ ॥ वायसर्थंकोमसाय व्यप्रविनैयायनाणानीसर्वे कामममाक
क्षीमगछक्तिसूद्याविनंश्वा ॥ १२ ॥ कुंफिजाईयदेलाकिमण्णवस्य बन्ध नमा वंसः
माफ ॥ १३ ॥ ❁ ॥ ॐ नमो देवाय ॥ छिमिछिम निवचयपादपंकज ॥ श्रीधर्म्मघोषविः
पिफनंरवाधिमतवमलालतलखयंदुयेलनमामिहं ॥ १ ॥ धम्मघोषघ्माः

नत्वैम्रक्रूद्लित दुःखविनाशनैः गम्भ्रक्रमूनि गतत्रश्राजम. हयँ उयस्यप्रकाशिनं॥
॥ह्वलियपूगतं दउलियनामी. पश्चिमगिरिविनयपाह्लि मंरवउकटकगोम्छनमिवी
प्रेमपद्क्षमिवीविक्रमीवा॥ २ ॥यिपूयवीक्षि र्ह्नू म सायक्ष्व. विमलनियसलक्षिमं-
रनलिनीकमल्हसू गत्वकह्लालदिश्यक्रसम सांहिँ॥ ३ ॥सकनग्रमानमी
सम्प्रदचलतमपश्चिमिवाडिं तं शहि वं श्यवां जलविविज्ञननावं. हयँ उचैत्यनिवासिनां॥

[illegible]कि कैं॥ ८ ॥ ऊँ सू नामा निर्वेत्व वा गंन त्रिलिंग लप कं लु का. र
[illegible]यव कु कु मिर्थ कु [illegible] ध र्व कि विक्र मी॥ [illegible] ॥ पूर्व दिश दवा
[illegible]लमचु र्व स्या ग म कि वि [illegible] ननाभ न. [illegible] मनी व दी [illegible] जिनै॥ १०
॥ कें [illegible] निको [illegible] य [illegible] व किनदि मं गमं. [illegible] ल ऊँ [illegible]
ऊँ सनाम [illegible] कि लि कैं॥ ११ ॥ ऊँ तु व वर प्रद. [illegible] वागीश्वर मा [illegible]:

ऊ॥विरहंविनवामकवं॥ २ ॥कोद वामलविजलद्ध्रुऊनौ॥मासविम्
समृद्धोलदृलु मृखोकमलायगशायनवावधवं॥ह्रिमलुदियोलुलगलुयुटं
॥ ३ ॥ऊधवराङ्किणपद्धुऊनालिम मीसवदद्धृदगाजिगमथ्यद्ववृतांवद्
त्रकृ हारद्धविनवाहृदृगं॥तनूकोमलसाद्धवयाविगवं॥ ४ ॥मृगवर्मनिव
ह्निनवामानिलुरतुण॥लमाश्चिकलेलुधतीकमलादलकामलनाहिसमं॥माहि

सारिगवाङी॥ नमामि दक्ष्व लवनवाङ्ग॥ १६ ॥याङ्कलयक्रकिरथि
नरसीं विमलउ कामलपंकउ दसी॥ हुनप्राङ्गन नागनहस्मं॥ नम्
मामि दक्ष्व लवनहसीं॥ १७ ॥नागङ्खवनन्दकौ नविरङ्गीलह्लुं नसम
स्वविनविक्त कल्पकाटि सुमना सनविहो॥ नमामि दक्ष्व लवनविहों॥
१८ ॥पद्मनारङ्गु रसारिगनारुयअ पानिङ्गुरनिम्भिननारौवृक्ङ्गा

त्रिशूलसारितनाशं तं नमामि दशबलबुद्धनाशं ॥ १९ ॥ लङ्कनयक्र
विद्रुमिनपादं, ऊर्द्ध्वकमलकिविनाडिनयादं नागयक्ष्मगणवन्दितपादं ॥ तं न
मामि दशबलवरपादं ॥ २० ॥ रागरूपयक्षकिनाजिनयादं, दवदानवल्लनाजि
नयादं ॥ सर्वदवगानवन्दितपादं ॥ तं नमामि दशबलवरपादं ॥ २१ ॥ सर्वदय
गनपूजितश्रीश्री सूर्य्यकोटिसमप्रभविनश्रीश्री, दिव्यकालिकललनापिनश्रीश्री ॥ ती

नमामि दक्षवलवनश्रीबैसं ॥ २२ ॥ पिष्ट धूप नवद्जिनश्रीबैदी पर्गं धसदन न
यन्त्रीषं मास्यवस्कनवद्जिनश्रीधीपं नमामि दक्षवलवनश्रीषं ॥ २३ ॥ त्रिभुव
नधर्म्म स्वामि त्रिस्वस्यगनसीकूं नगदिन, नत्न छत्रा दिरिट यूरू किस नतथीलि
यन हून नखें स्यवद्कथं नन, स्यक्ति न नमा छ स्ययथगमनश्री मडायाव लाकिन
छ्व नस्य, स्यम व नाज समायका ॥ २४ ॥ ❀ ॥ ॐ नमो लोकनाथाय्या ज्ञानाधि ना पिन्दुख

मम्सू बदवसैर्ठ्राधवेयक्कमूनिदानयवस्त्रितामघार्त्रिंगनादिवयलक्कानत्रुविनाय्निर्तीं
नमोस्तिमिवसाकनूनामसाय॥ १ ॥वावाककोटिमूसगंडाकनयवाय्ष्वालालिः
कंसूगनयरवलक्षाबिनायास्रत्रागमालतिगकूयउद्दाधवायनित्यंनमामि॥ २ ॥ष्ठु
स्थाउयाबिविकमवालनसमृद्धिनायसूक्लोपविगदूक्लिवाउमवदिनाया॥वनादिहावकनः
कालवन्द्रुविनायनित्यंनामामि॥ ३ ॥उंत्यादहींमहवसागनोरैवसायदूर्गमहदूर्ग

त्रिभुवनपतिभावनाय॥ नागेन्द्रदायपतिमुक्तसूनिमनाय नित्यं नमामि॥ ५ ॥ मोह्य
दितिश्रुतुवज्ञविशासनाय, धर्मामृतसकलसत्वसुपावनाय॥ महाकरुणानन्दपवि
दानवदमाय नित्यं नमामि॥ ६ ॥ दैत्येन्द्रवलिकालभ्रमाज्ञदायसत्वायकेवलविते
किमनिग्रहाय॥ सर्वज्ञज्ञानपविपूर्णिमनाय नित्यं नमामि॥ ७ ॥ ज्ञानमोन
नकमार्गविसाधनाय, ज्ञानगर्भकिर्मियपति ध्वंसनाय॥ ज्ञानकदृष्टिबलाकिस्वमयमो

कृपयानित्यं नमामिश्री ॥ ७ ॥ त्वं त्वं लोकनाथ भुवनश्चर्मूढाय॥ दारिद्र्यदुःखहर

पंजलकनायात्वत्पादपंकजयुगं प्रणिवन्दिताय॥ नित्यं नमामि ॥ ८ ॥ मालतकुसुम

कुलनविकसथमनासाविवकान्तमि मीदकलदंविमलप्रत्यवाविकामलिवसनिजापवयानिरागमह्

नित्यं नमामिश्री ॥ ९ ॥ मकुकिनादज्ञानरत्नौजलिधार्लमागी॥ जक्षागतिख्यमिनंस्कयवाः

दशगी॥ दुःखवानव्यप्रनिकर्मोसमूलानयको॥ नित्यं नमामिश्री ॥ १० ॥ संकाष्ठनगनमाथ

॥ उत्पलवदि गणिक्रि गतु मायचसि हि श्री अमवर्ण सुनिर्मलारगवू तमातन
जुस यकब वर सर्वसत्व उद्धवनि ॥ ७ ॥ श्रीयेउ सत्व भरू मूधनि वउ
घवस धविमार विज्ञह्यायि गउ गगननाथ मानस्य चवद्विनी ॥ ८ ॥ आनि
वंपक्षमा नरि वन माचनाज्ञु तधनकि रपालि आन कुम्हु धवन न्ह्याम कडवसियु
क्रां ॥ ९ ॥ नाहिशीर कब्यूचकं कू मल्लुन्तुन नवियथिमारविवि धधूव्यकमल

स्य श्री प्रच पाङ्कि कालमनिय ङ्गकि लोकनाथया २३ ॥ सिकिलि स्ववाकिजम

सानु सर्व वृ, नाकों दिवावकवना मनूस्मवति शद्र स्वन्नवि धूयपाय विनाश्यादि

स्तुस्या क्ति रव सकलंम वय्याति ॥ २४ ॥ ॐ निरुगयवरू जूय्या वेला कि न्हव ब.

स्य, कनघासकवस्त्री सं समाप्त ॥ ❀ ॥ ॐ नमो लोकनाथाय ॥ सर्वबुद्धगम

लि कीयिपनुस्यं कृति भवच्चविनं गयवरू पं,स घवयवकदि थीमसरू पनेनमा

सरनं सतमा नमू क्रियदं॥ १४ ॥आकमत्यथेत्यग फं पापदन्थ्य क्षमाप्रिकंथ
न्थ्य मागवेत्यगु फेडसर्वपायविनाशनी॥ १५ ॥गुरुदनउपकारं धर्माकीर्तिन
यानिकिलेत्य थायिनवायवन्हि: मसादवमाक्ल मक्रिदं॥ १६ ॥मरवलाविमाथा:
आलं थ्रमवाक्लगु आनिकं कुंदं आत्मगथ्यदन्थ्य वान्तु किपदपेकओ॥ १७ ॥थ्रम
वेत्यस्यागकलं वद्ध थमसी थरदिसी यर्बेकलेन्हलया फं सर्वानन्दरमम्बनी॥

१८ ॥ लु म्हक्रि मक्रि थ्वि न रि नेलु ज्ञासामि धर्माव्ह नेरु न्हु ध्व वा वि कि लि वस
नाघायन मलय हवं॥ १९ ॥ किमितन छ्वं हे-कर्म, दालि उ द ४ रव विनाजनेव्ह
घमम्ह लाजम्ह, सर्वदु म्ह्व विदायनं॥ २० ॥ म्हयम्हाल्ह विनावत, किंपु व्यािकीं
रु ला रु लेधा द्वं वि रिफि छु रकालि, त्रिमहासमलनवनं॥ २१ ॥ मजूआनि थेः
लपालि, सर्वज्ञा विकथ विना, उ ला उमम्ह म्हम्हवरवा, सर्व लक्ष्मा देह्रि पदं॥ २२ ॥

जिनरक्षामहाक्रूरःवागद्धपदिनाक्षनं, समवनहरवपार्दीन्हुरक्किसि संग्रावधी॥

२३ ॥ गीधघ्रयपद्मादीयीः पूउनायव्रभादि गंःक्कतघूउयवायकादिलोदनायन

भासुनं॥ २४ ॥ननिगक्षमगगौन्, वाक्किगं सक्कुलाद्कुलं, जिनगनम्, वज्र

स्तु, माक्कमागसंप्रावदी॥ २७ ॥ इतिवृद्धगीतसमाप्त॥ ॥

श्रीं नमाधाय॥

[illegible]

[illegible] बं तव ब्दि तयादय मीं॥ हैं सास सी

लानयानि [illegible] स्म ग नय [illegible] लि कु [illegible] म [illegible] वालितरु ॥ ह नैवि

॥ नैहाल्व दा स कल्ल सिधि सदाल्व मालि ॥२॥ ह्म माल्व यैं वि मल्व सि

थ्य तया नल्व वि॥ मे पाल्व मा द [illegible] नैगव [illegible] नम [illegible] भाक

सिधि व [illegible] न [illegible] नवुं पञ्चवि॥ नैसाल्व दा सकं ॥ ५ कोन [illegible]

सुश्रूषकाह्मि तिन, थोगि ... ति तिनी ने ॐ न बि ॐ द्यि ता के न्ह्व

हे कल्पवृक्ष, करु माता, न सालदा सकसि ॥ २ ॥ न वाति नं सताहि

थुनक, नाश्ठनुति, वानिस न्याहन श्रु ति नथ्वे यु थी यु, नीलाय नान

यनहि द्रलन त्म जानिंन सालदा सकलहि ॥ ३ ॥ स सालसा नबथेना

नह्यासुयसनादवाल नाज्यय स नाध्यियकिननानावज्ञासना मयाथा

ऊ

ठुन सिंछिये ना॥ नि साल्ल ना सँकं ॥ ५ ॥ कपु गयू गवसिपु सिं तनींका
नादि॰ पुछ्र सुवा॰ऽ३ गुनखे ३ नपु जि तानिं॰ नि तँव नम्ह्यसिंनु नाल्ल
मकनाहं नि सिल्ल॰ना सकं ॥ ७ ॥ मपुन कोख तमा॰ऽ३ ग्याम्ह्याव्र मथा
नाल्ल मघ्यानि॰ दु माल्ल सपु॰ खि ता नि सताढिं बाङ्क सतजिंन तसिंछिये॰ऽनि
नाल्लनामकँ॥ ८ ॥ क्षकुकथेम नत॰ऽॐ दि तमतनाक॰ सिवार्थ साधु

क

तलाहूगतिलमङाविग्मानगंम्नरवद्वविचासकादि तंसल

दासकाल सिद्धितवादल्लु द्वि।।न।।७।। श्री।। तिसालदायतु तं स्तमाखर ।।

ॐ नमो ब्रह्मायास्त न सीकृ स्तमसंकास द तोर्प ब्रम्हस्व

दिनदासंनेरमाकृ दा कबी।त्रिति तं नमामि गो स्जास्थ

मु मृत॥ १ ॥ सूनेत सूमतन सुतातनै॥ वनतकृत नमेन
सकई रु वरमान्त कावाकौ नमानमुर सामीय ननसौ दृ गौ॥ टि
॥ २॥ दाकृनमू रगत्रातल मुरुव व्दि वहव समवदपामकेर ॥ ×ज
दीनमूव ग्रौ सकु तेनेमामींगौ त्रैनगवातानाा॥ १॥ नव

बुजदि व नविकिननदि तासगम न नीक्ष्मि नार मध्य नमासनाह
द नेन मा मि श्रीम्र म नार वा।।मा ह कक्ष नित नमोम इ नाथम
श्री श्र मा नी दउ म नमा स्न न वक्षी गग क्षा नाक्ष व नो भय गमि
नाउभ नाक्ष्म नाधि यग नमय गु व ठि व स्ता।।का गा।।ब्र व स्व
गूव २४ न नै न मा मा।।२ वय वनो ४म न व च नाख्या नम

त ह्री ह्मप्म क आदरि ग झ्रव स्नु गीत ज्ञ क्षुआकि कस तो सन

गी त त वादि रो ह्रू श॥ ह्रू न व भ न छना ह स्म गीत वृ ठी था

सु पति दि वी रुप[illegible] त स्र त क्कि नि द ने छा ञ ज्ञ नाकि रुव न ल

स्व ना ज्ञ न त॥ कृ॥ नश्रो द ह्रीयानि क ने प म ष्ट न [illegible] सवि तो प

[illegible] तेनग [illegible] नगे [illegible] म [illegible] तेव [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] व ॥ [illegible] नो [illegible]

[illegible] ल [illegible] नी [illegible] न [illegible] नि [illegible] नव [illegible]

[illegible] न नव ॥ नगीन [illegible] नि [illegible] नव [illegible]

न श्री ॥ [illegible] ॥ क [illegible] नी नोवि द ॥ [illegible] ॥ [illegible] नी श्री ॥ श्री ॥ गा [illegible]

[illegible] ॥ श्री ॥

॥ नमः श्री [illegible]

सनाथ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ दक्षि [illegible]

स मे गीजा । हा त दे न प आ ब्ल ना क्र रा उ मी ग उ कु द ना ना कृ न , न के श्री म

नि मि उ प ता श्री यू श्व श्री मे ह न , न भा उ द प अ श्री न म स ना मी । । ८ ना ति दे

कान ये गी ना कु ना दे म ना पु । ४ । र उ श्म , न मा हा के ना था गी ८ । का प ना दे प न

रम गि श्री या ने य हा ते कृ प कु ना दे द न श्र ना ध न ना मा । श्री गो दि न श्री

नमालक्कुनाथंलामिहमनदितमूळियानिलासय्यताक्ष्मनाकुयवानि॥ १७
॥आरवछिरवयानिम्पुर्यंयलमनसाक्कुनयेदृयायंश्रा कुयवयुरवानि॥ॐ॥मीमध्या
थ्यिनसकलजथयमनिमिगेरदकाविकयंवा॥१७॥ गकुवुतयागिक्षिभया
यनलचिंवक्षेगोतलंध्यद्याउमागुद्यायायेकादृक्षरवलुगाकिंवम
विद्याम्मिनश्राकाओ॥त ॥ गोतयाडुरवविनासलवातकुर्विसंसाचनतामदछियेतु